ऐन फ्रैंक के आँगन का पेड़

जेफ़, चित्र: पीटर, हिंदी: विदूषक

ऐन फ्रैंक के आँगन का पेड़

जेफ़, चित्र: पीटर, हिंदी: विदूषक

"हम दोनों ने बाहर नीले आसमान की ओर देखा. बलूत का पेड़ ओस की बूंदों से चमक रहा था. समुद्री-चीलें और अन्य पक्षी हवा में उड़ते हुए रुपहले दिख रहे थे. हम इस नज़ारे में इतने रम गए और इतने भावुक हुए कि हमारे मुंह से शब्द ही नहीं निकले." - ऐन फ्रैंक

आँगन में वो बलूत का पेड़ 172 साल तक खड़ा रहा.

वो हॉर्स-चेस्टनट (बलूत) का पेड़ था. उसकी पत्तियां एकदम निर्मल और हरी थीं. उसके सफ़ेद और गुलाबी फूल, शंकु के आकार के थे. उसके बीज ज़मीन पर बिखरे पड़े रहते थे. सर्दियों में बलूत के पेड़ की सभी पत्तियां झड़ जाती थीं. फिर नीले आसमान की पृष्ठभूमि में, उसकी नंगी शाखों का एक जाल दिखाई देता था.

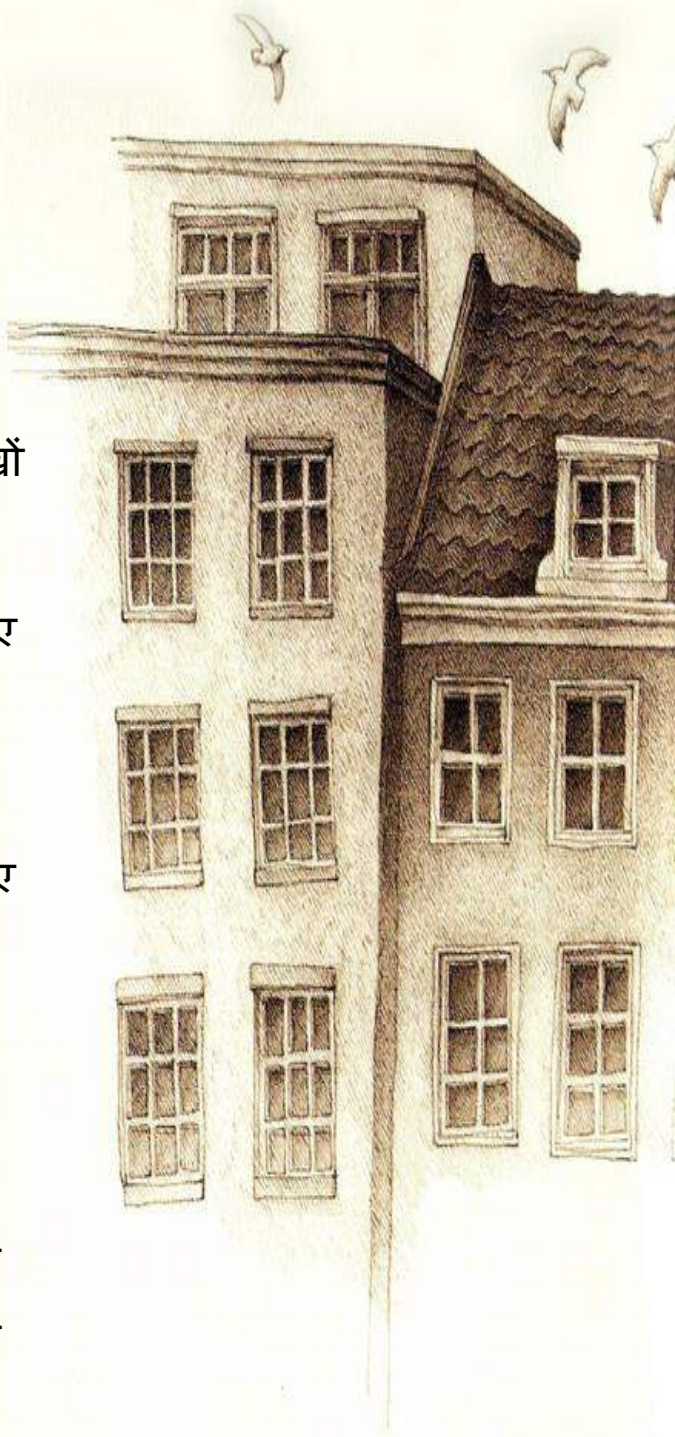

पेड़ एक नहर के पास थी. शायद इसलिए समुद्री-चीलें उसकी छांव के लिए हमेशा तरसती रहती थीं.

ज़िन्दगी की पहली दुनिया तो उसके लिए आँगन ही था. पेड़ अभी बहुत छोटा था. उसकी ऊँचाई भी कम थी और वो घरों, वर्कशॉप और फक्ट्रियों की दीवारों के पार नहीं देख पाता था. फिर एक वसंत ऐसा आया कि वो, नारंगी छत से से भी ऊंचा हो गया. तब उसने पहली बार उस सुन्दर शहर का नज़ारा देखा.

उसने अपनी जड़ें फैलायीं और फिर शांति से आकाश की ओर बढ़ा.

तभी युद्ध शुरू हुआ.

धमाकों और विस्फोटों से ज़मीन हिलने लगी, राकेट के शोर से
रात का सन्नाटा फटने लगा. अजनबियों ने शहर पर आक्रमण किया.

युद्ध शुरू होने के बाद पहली सर्दी में, नए मालिक ने पास की फैक्ट्री खरीदी. साथ में उनकी पत्नी, और दो बेटियां थीं.

बड़ी बेटी शांत और सामान्य थी. छोटी बेटी चंचल थी और उसके काले बाल थे. जब कभी वो फैक्ट्री जाती तो या तो वो पानी की नहर में खेलती, या फिर किचन की खिड़की में बैठकर कुछ लिखती. वो घंटों बैठकर लिखती रहती. जब पिताजी उसे बुलाते, तो भी वो लिखती रहती.

पेड़ को वो लड़की बहुत पसंद थी.

गर्मियों की तेज़ धूप में लड़की ने पेड़ के पास आना बंद कर दिया. फिर चिंता में पेड़ ने अपने पत्ते गिराने शुरू किए. एक दिन पेड़ को, फैक्ट्री से लगी इमारत में वो लड़की दिखाई दी. उसका परिवार भी साथ में था. अब एक अन्य दंपत्ति, अपने बेटे के साथ उनके पास आ गए थे. फिर एक और आदमी भी आया था.

साथ में एक काली बिल्ली भी.

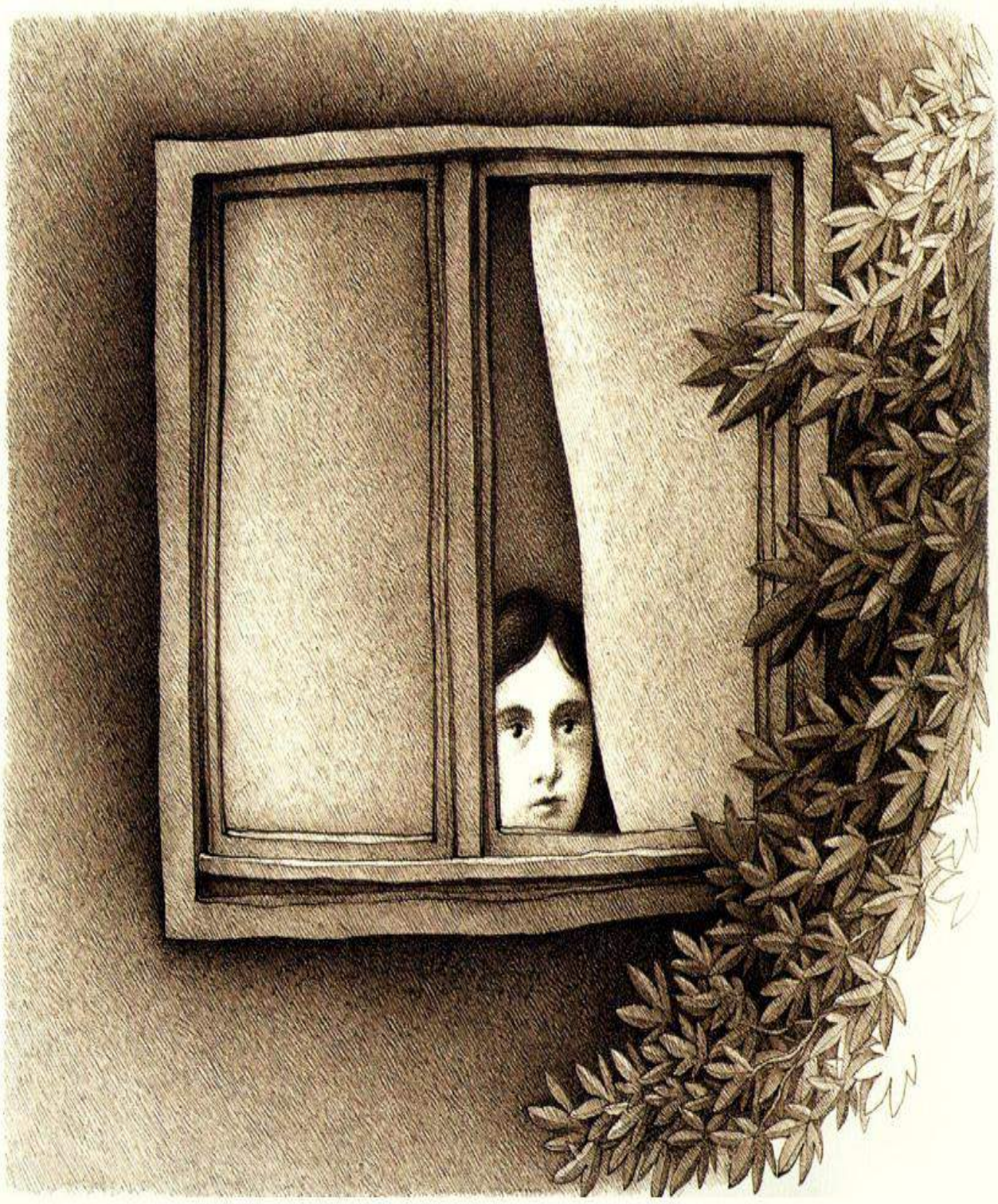

लड़की ने पिताजी के साथ मिलकर बड़ी खिड़की के लिए पुरानी बोरियों से पर्दे सिले. समय-समय पर पर्दे की झिरी में से कोई चेहरा बाहर देखता था.

बाहर का सबसे साफ़ नज़ारा अटारी से दिखता था. वहां पर लड़की पढ़ती, बिल्ली के उलझे बालों को ब्रश करती और उसकी पीठ सहलाती थी. कभी-कभी वो आसमान को टकटकी लगाए देखती थी. पर ज़्यादातर समय वो लिखती ही रहती थी.

वो एक लाल-सफ़ेद डायरी में लिखती थी.

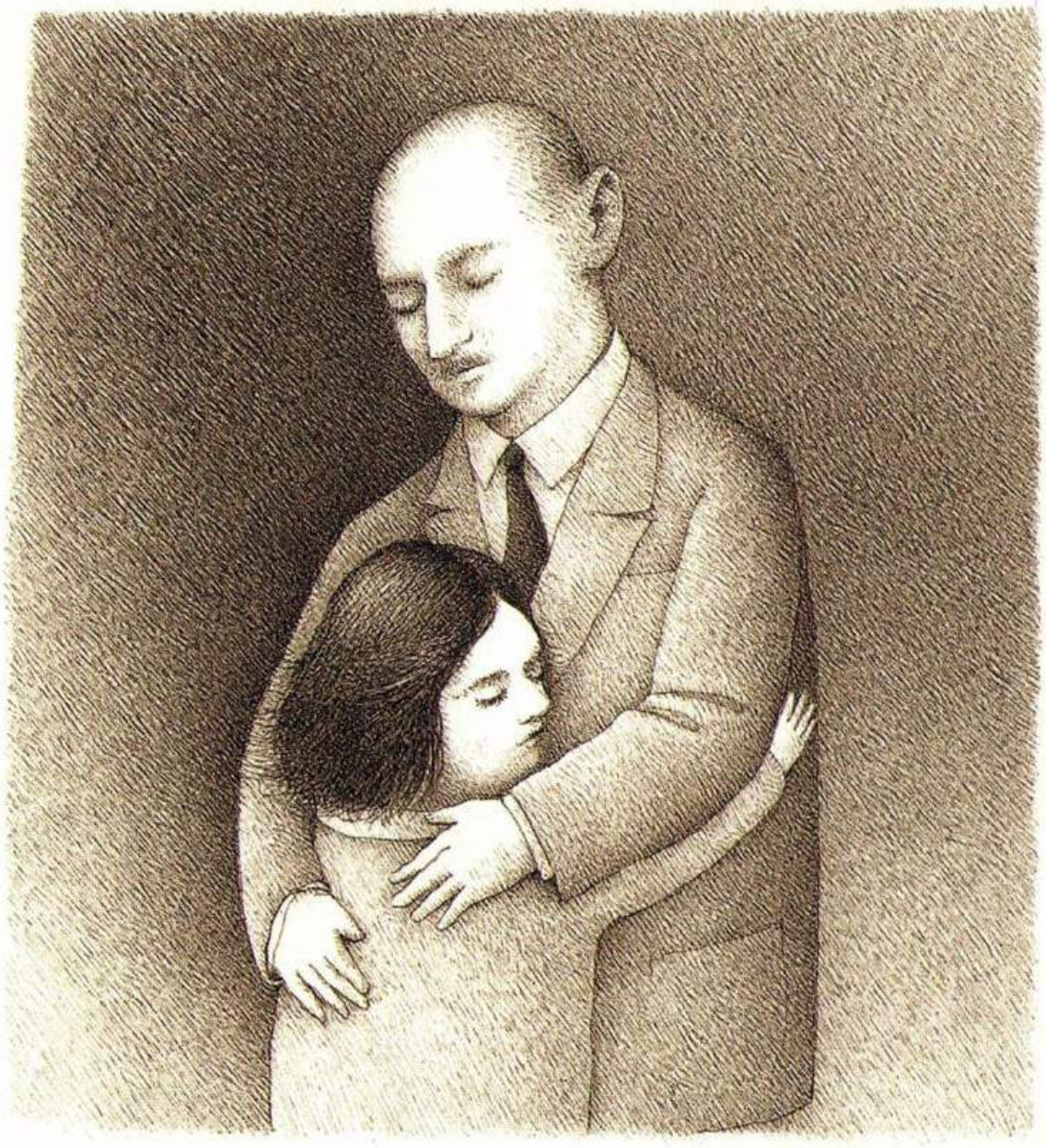

कुछ समय बाद लड़ाकू जहाज़ आसमान में शोर मचाने लगे और बम्ब बरसाने लगे. तब छोटी लड़की, अपने पिता के सीने से चिपक जाती.

लड़की घर से बाहर नहीं आती थी. पेड़, लड़की की परेशानी नहीं समझ पा रहा था. युद्ध चलता रहा.

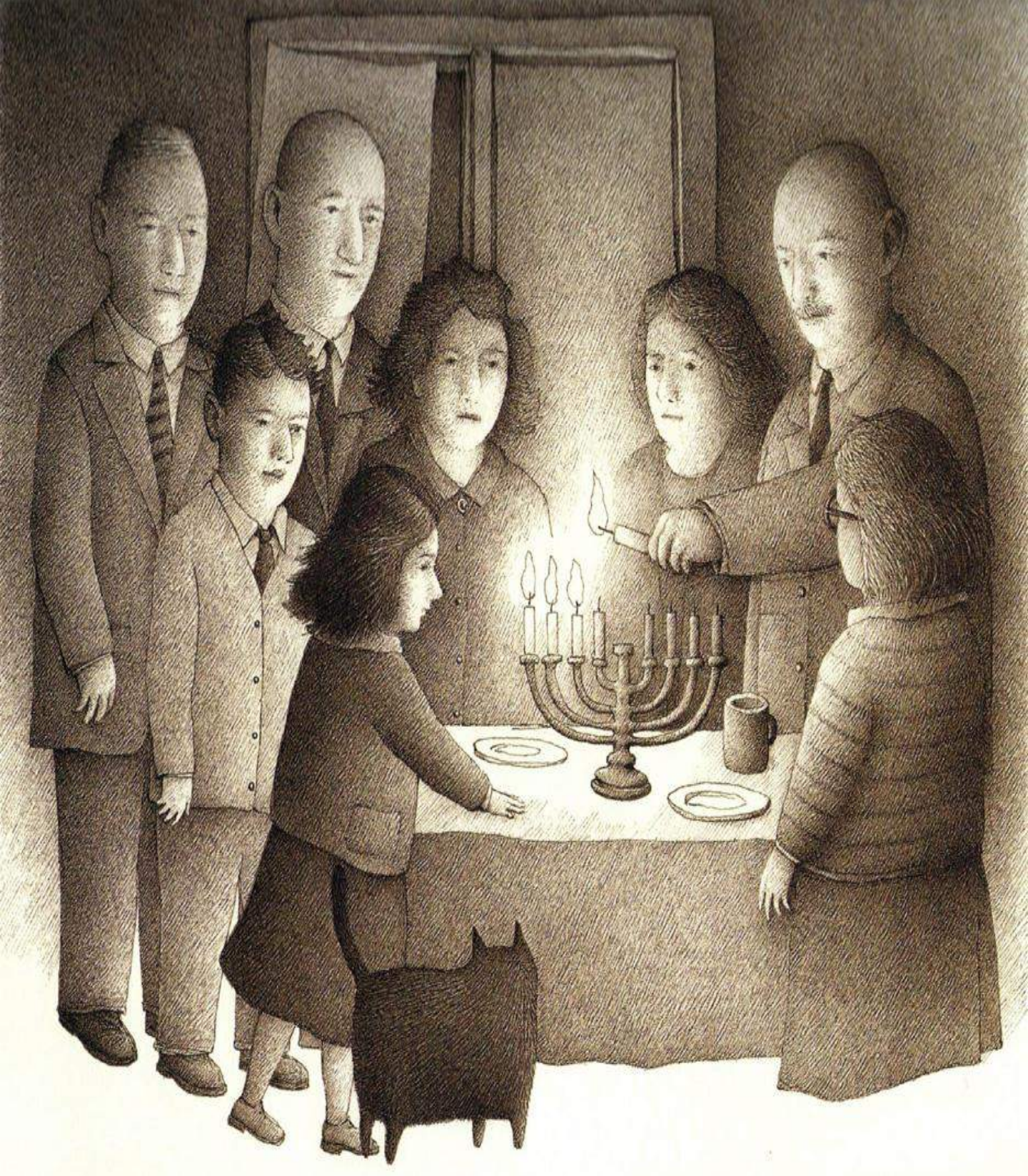

पर्दे की झिरी में से पेड़ ने, एक बार, घर के अन्दर लोगों को मोमबत्तियां जलाते और गाने, गाते हुए सुना.

लड़की, धीरे-धीरे कमज़ोर और पतली होती चली गई. फैक्ट्री में काम करने वाली एक युवा महिला, लड़की के लिए कागज़ और पेन लाती थी. लड़की, दिन भर लिखती ही रहती थी. वो एक-के-बाद-एक पन्ना भरती थी.

युद्ध शुरू होने के बाद यह चौथी सर्दी थी. पेड़ ने लड़की के साथ एक लड़के को देखा. वो दोनों आपस में खूब बातें करते और हँसते. या फिर वो अटारी की खिड़की में से बाहर पेड़ की नंगी, ओस लदी टहनियों को निहारते. उन्हें देखकर वे इतने मंत्रमुग्ध होते कि उनके मुंह से फिर कोई शब्द बाहर नहीं निकलता.

फिर उन दोनों ने एक-दूसरे को चूमा.

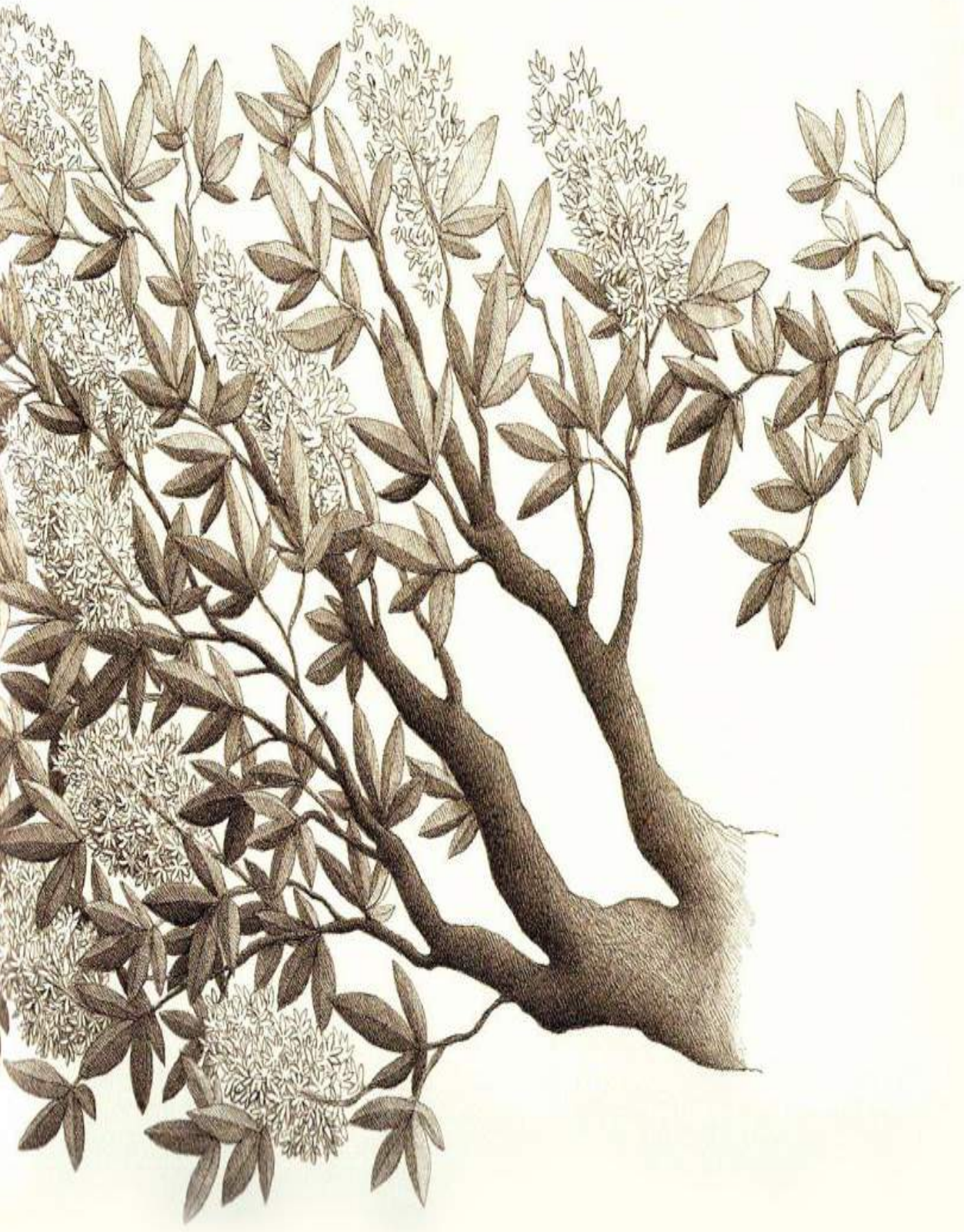

उस वसंत, पेड़ में सबसे खूबसूरत फूल खिले.

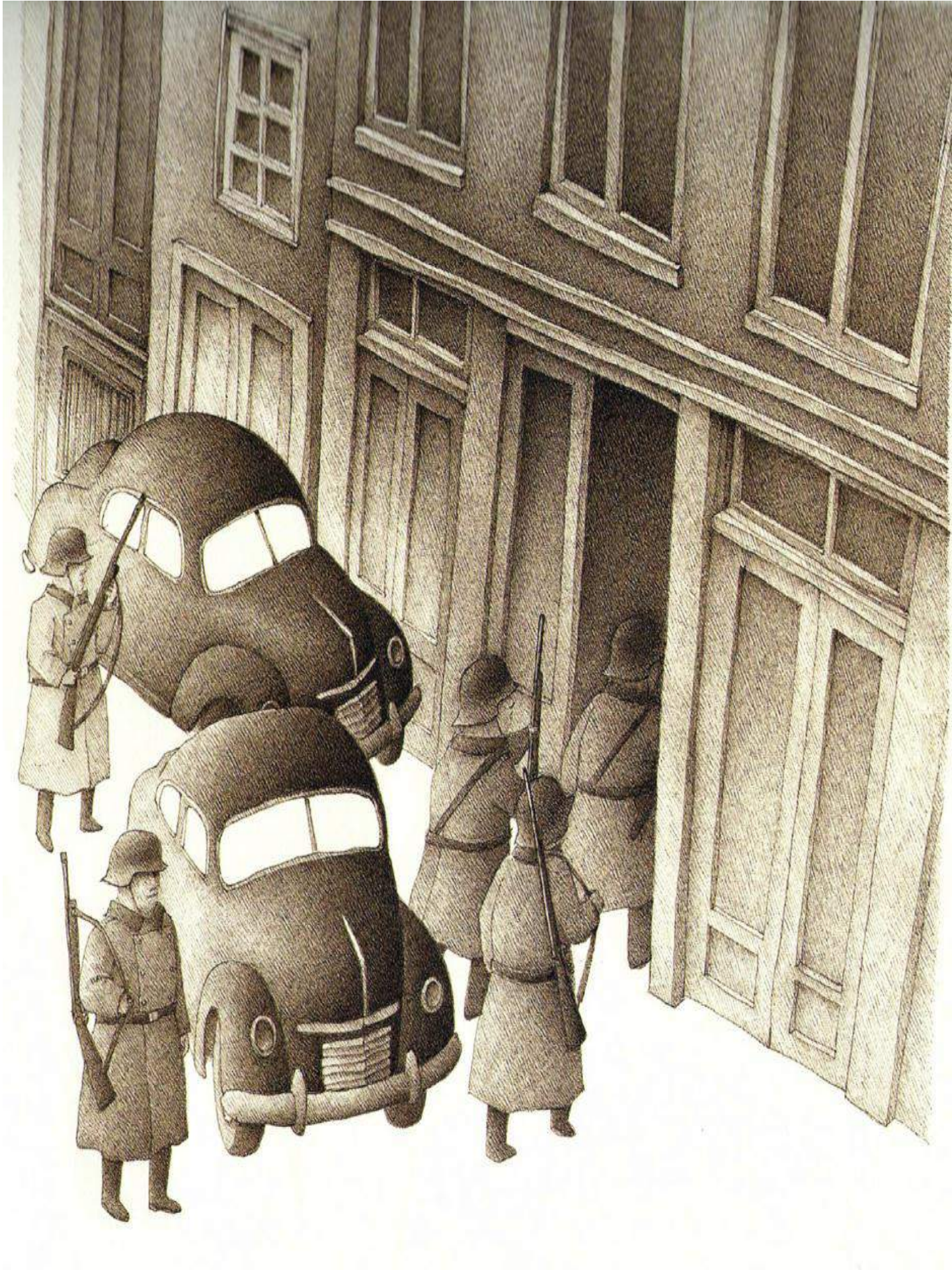

फिर गर्मियों में एक दिन, खाकी वर्दी पहने हुए आदमी फैक्ट्री में आए. उन्होंने अटारी की खिड़की के पर्दे फाड़ डाले और उस छोटी लड़की के सारे कागजों को ज़मीन पर फेंक दिया. फिर उन्होंने सब लोगों को पकड़कर काले रंग की गाड़ियों में बैठाया.

फिर गाड़ियाँ तेज़ी से वहां से निकलीं.

फैक्ट्री में काम करने वाली युवा महिला ने उस छोटी लड़की के लिखे सब कागज़ इकट्ठे किए. पेड़ ने भी उनपर निगरानी रखी.

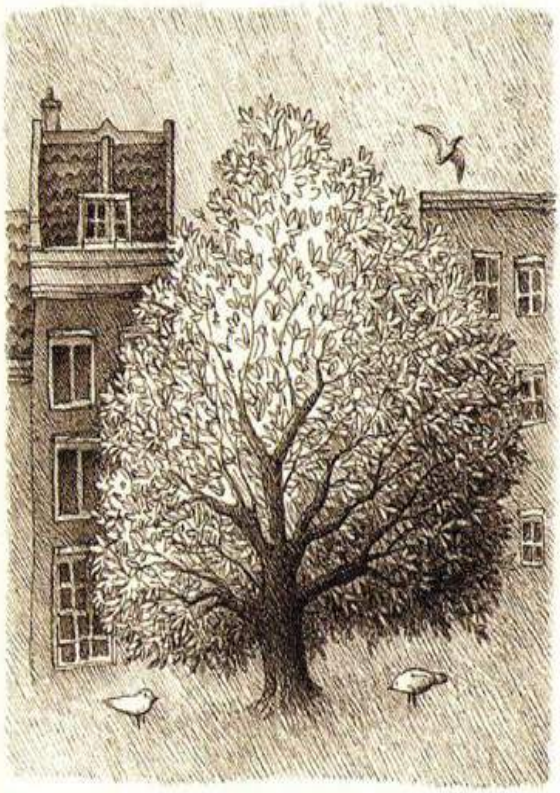

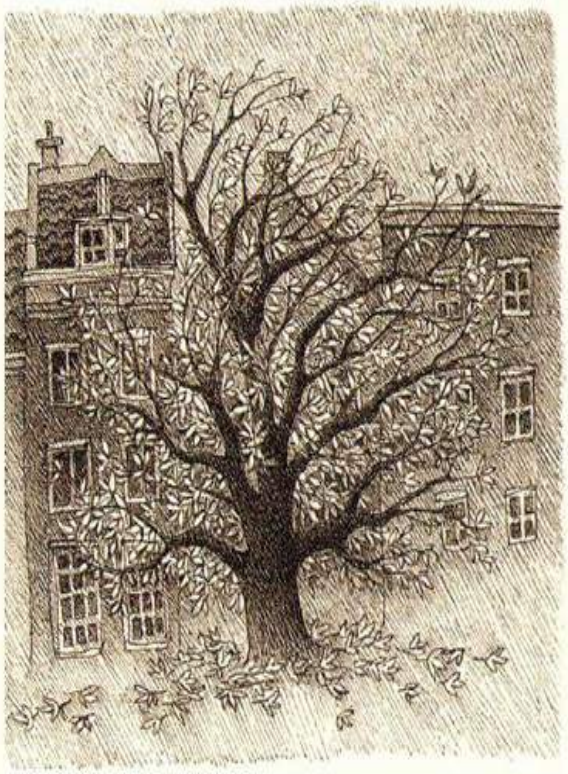

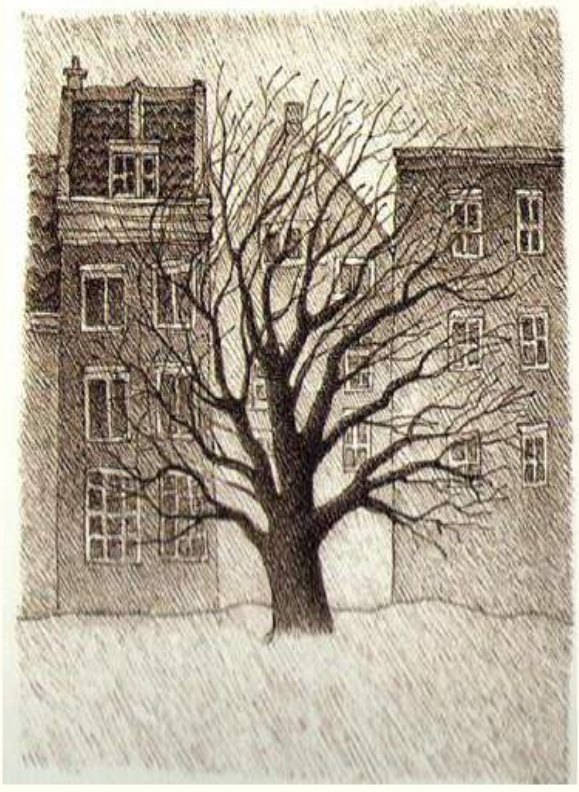

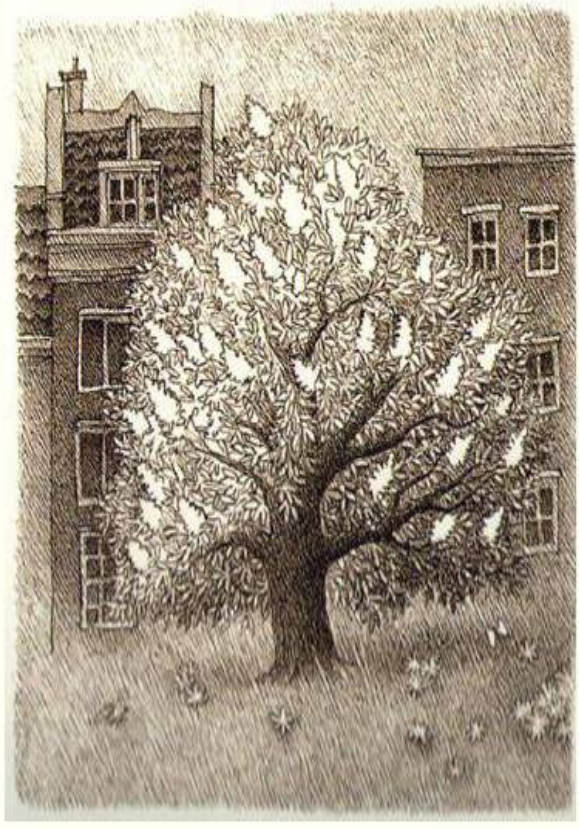

गर्मी, पतझड़, सर्दी, वसंत. मौसम बदलते रहे.

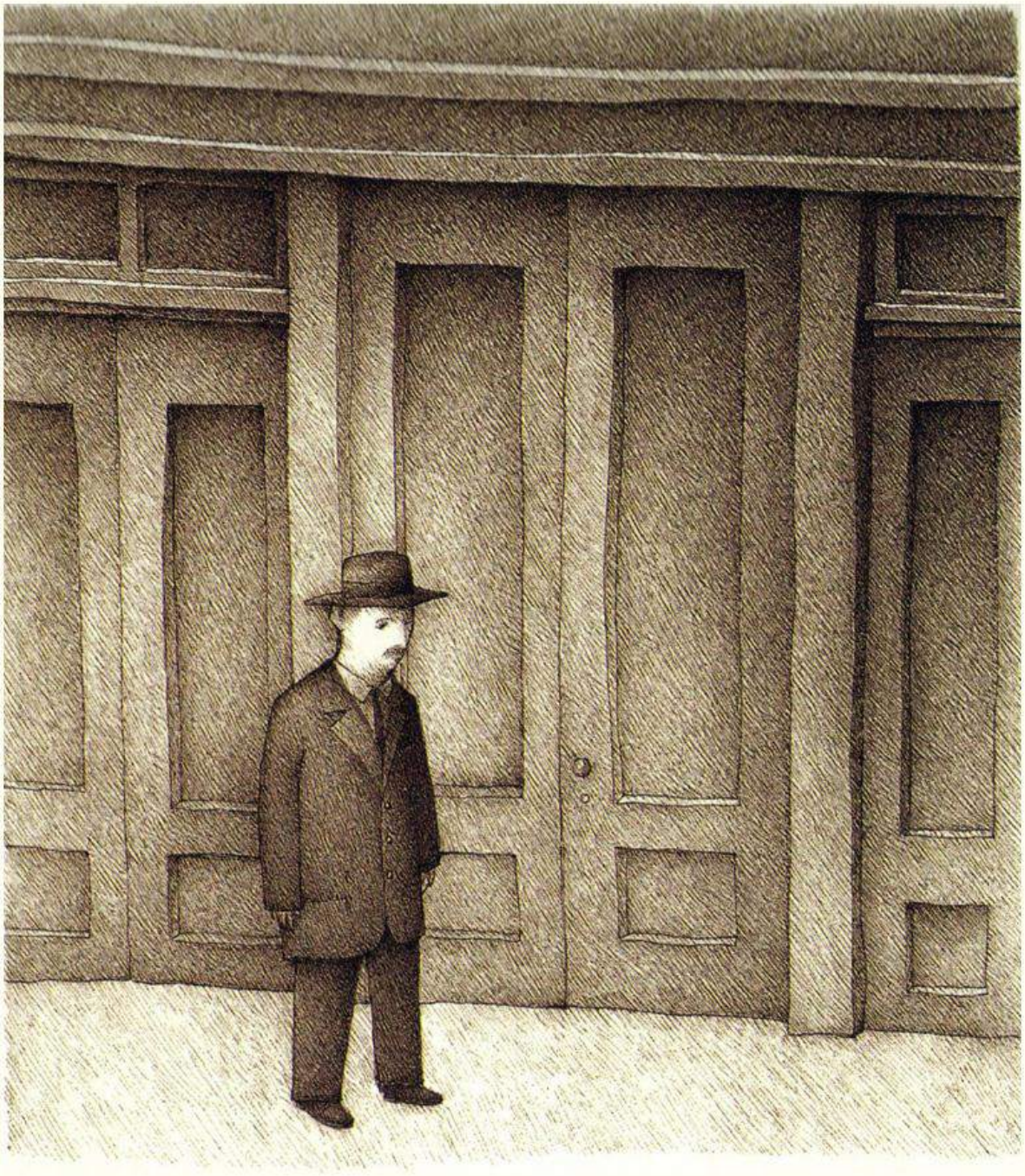

युद्ध ख़त्म हुआ. सिर्फ उस लड़की के पिता ही वापिस लौटे. वो पतले हो गए थे और उनकी आँखों में साफ़ दुख झलक रहा था. अटारी में उन्होंने, एक जिंदा भूत जैसे प्रवेश किया.

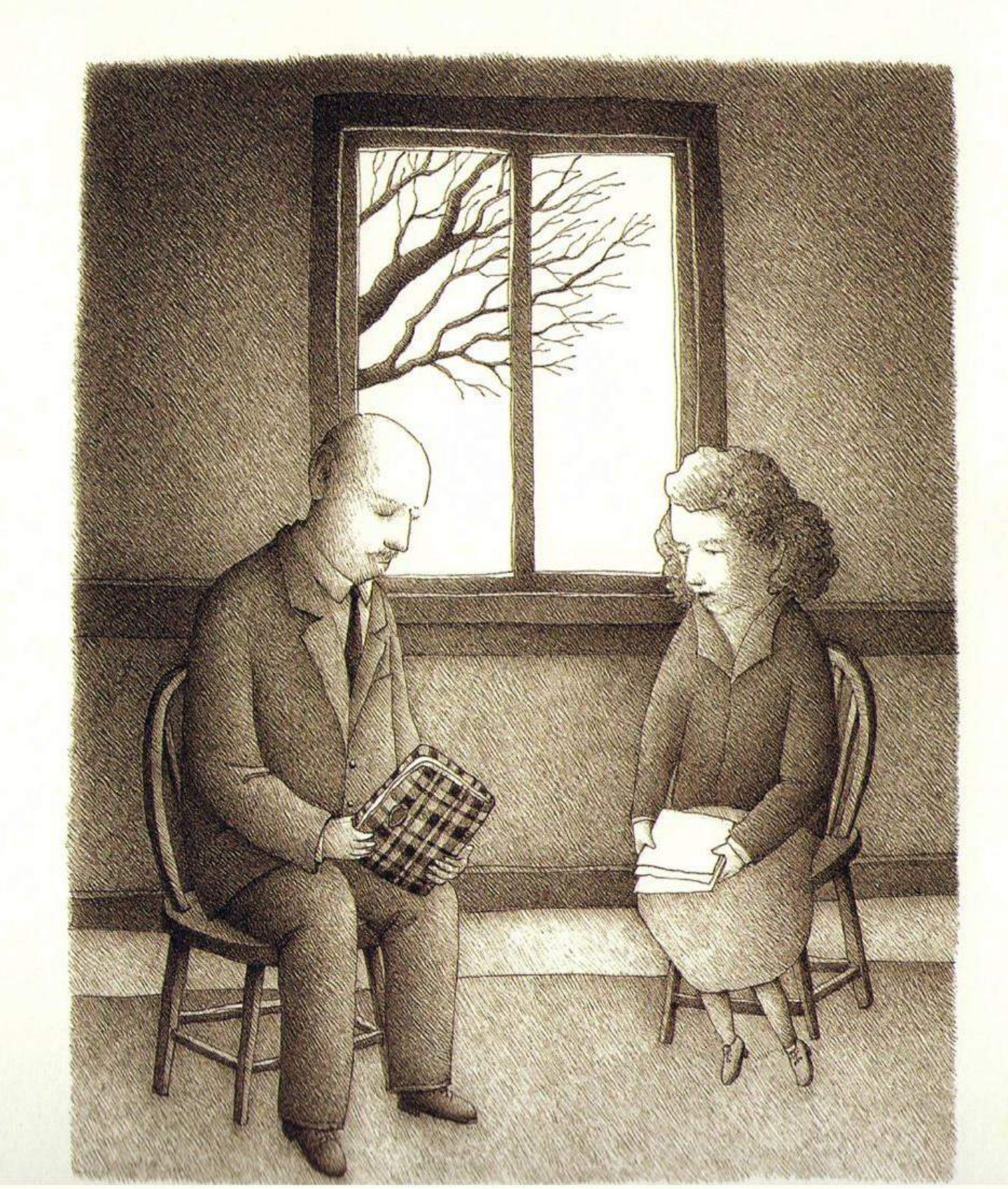

फैक्ट्री की उस युवा महिला ने उन्हें लड़की की लिखी डायरी और कागज़ दिए. फिर दोनों मिलकर रोए.

पेड़ जीवित रहा, पर पहले जैसे नहीं.

समय बीतता गया. पेड़ को आश्चर्य हुआ जब दूसरे बच्चे भी अटारी में आए. वे भी उन्हीं रास्तों पर चले जहाँ वो छोटी लड़की चलती थी. वे वहीं बैठे, जहाँ वो लड़की बैठती थी. कुछ बच्चों को सड़क पर पेड़ के कुछ बीज बिखरे हुए मिले. उन्होंने भी पेड़ को निहारा. वे भी पेड़ को देखकर इतने अविभूत हुए कि उनसे भी कुछ बोलते नहीं बना.

साल-दर-साल इसी तरह बच्चे आते रहे.

शताब्दी के अंत तक वो बलूत का पेड़ अपनी पूरी ज़िन्दगी जी चुका था. वो अब मरने को तैयार था.

बहुत से अजनबियों ने उस पेड़ को बचाने की कोशिश की. उन्होंने पेड़ को दवा के इंजेक्शन दिए. उन्होंने पेड़ की छंटाई की और तने से निकली कोपलों को काटा. उन्होंने पेड़ को सहारा देने और उसे खड़ा रखने के लिए एक स्टील का ढांचा बनाया. उन्होंने पेड़ के बीजों को इस तरह इकट्ठा किया जैसे लोग सोने की मुहरें इकट्ठा करते हैं.

पेड़ को याद था, कि कितने कम लोगों ने उस लड़की को बचाने की कोशिश की थी.

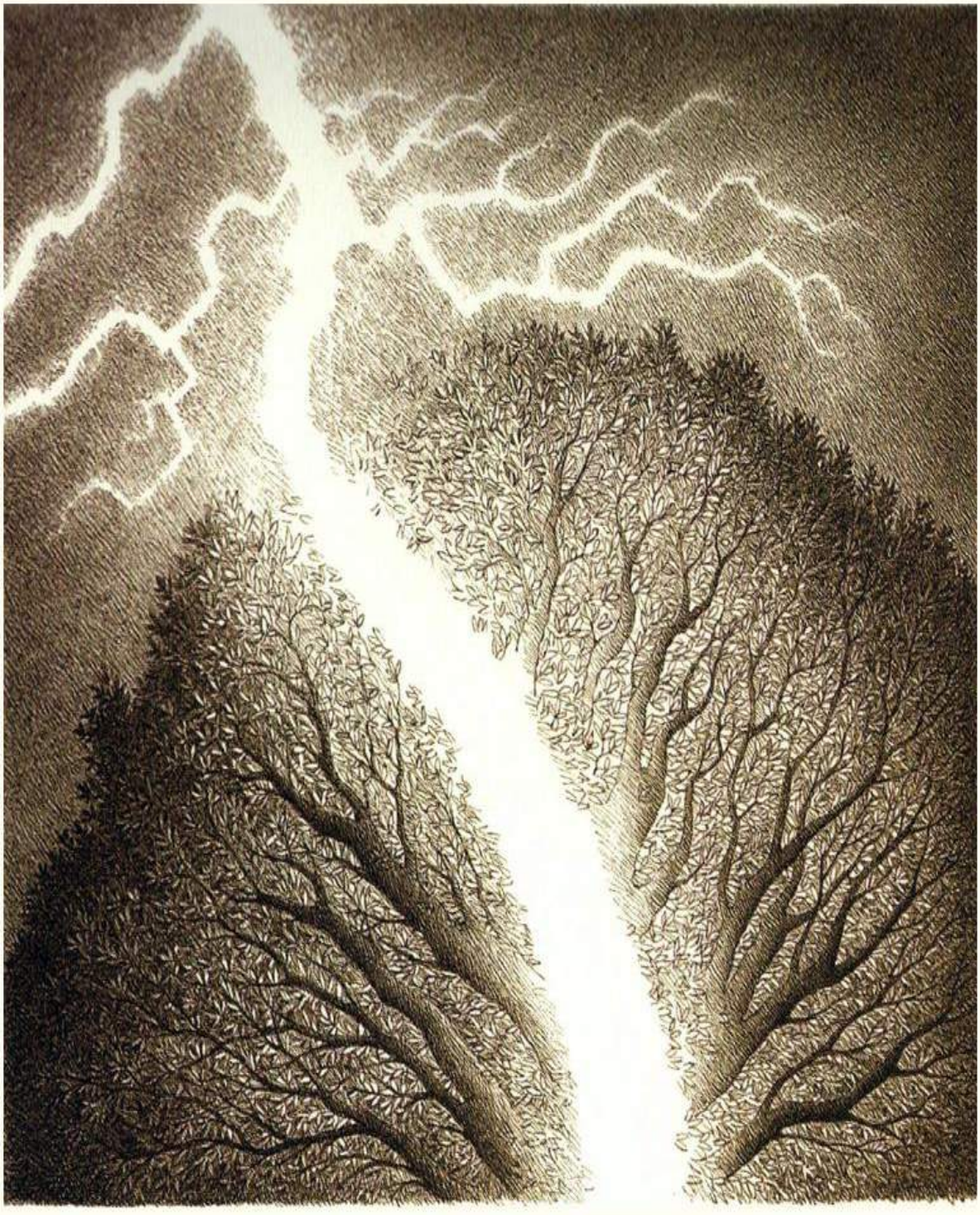

जिस साल वो छोटी लड़की 81 बरस की होती, उस साल गर्मियों में, उस बलूत के पेड़ का तना दो हिस्सों में टूट गया.

छोटी लड़की जैसे ही, वो पेड़ भी, एक इतिहास बन गया.
छोटी लड़की जैसे ही, वो पेड़ अभी भी जिंदा है.

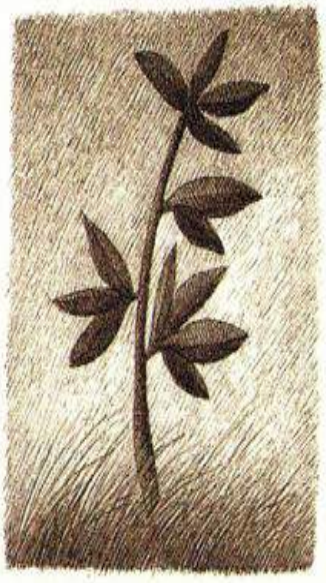

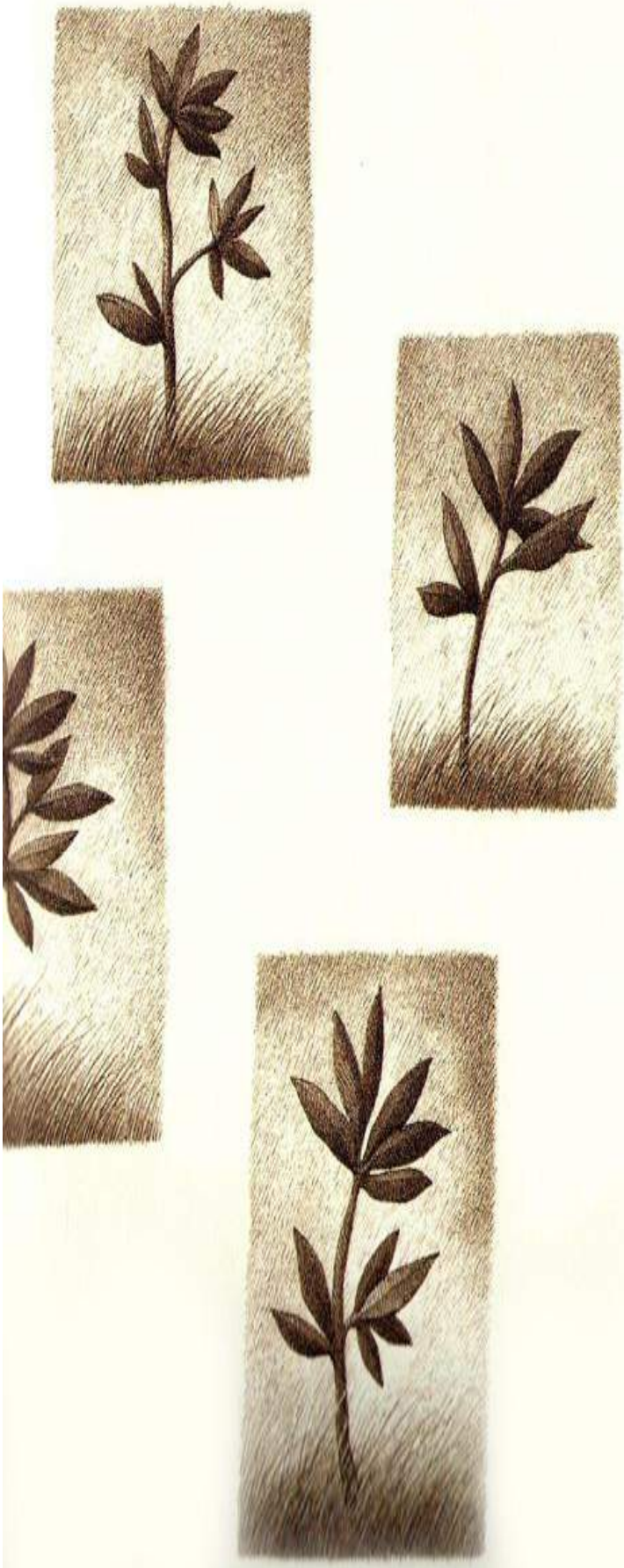

उस पेड़ के बीज और नन्हें पौधों को लोगों ने बहुत प्रेम से बोया. उनमें से एक पौधा, न्यू-यॉर्क में बढ़ रहा है – कहां? वहां, जहाँ कभी ट्विन-टावर्स खड़ी थीं. एक और पेड़ अर्कांसस हाई-स्कूल में बढ़ रहा है. उस पेड़ के पौधे अब इंग्लैंड, अर्जेंटीना, फ्रांस ... और अन्य कई देशों में बढ़ रहे हैं.

अब उस पेड़ के पौधे, पूरी दुनिया में फ़ैल रहे हैं.

नए पेड़ अभी भी युवा और छोटे हैं पर फिर भी छोटे बच्चे उन्हें देखने आते हैं. वो उस बलूत के पेड़ के बारे में लिखे, उस छोटी लड़की के शब्द पढ़ते हैं. उसके बाद बच्चे, उन पेड़ों के पतले तनों को छूते हैं.

पेड़ को छूकर वो इतने आत्मविभोर हो जाते हैं कि उनके मुंह से शब्द तक नहीं निकलते हैं.

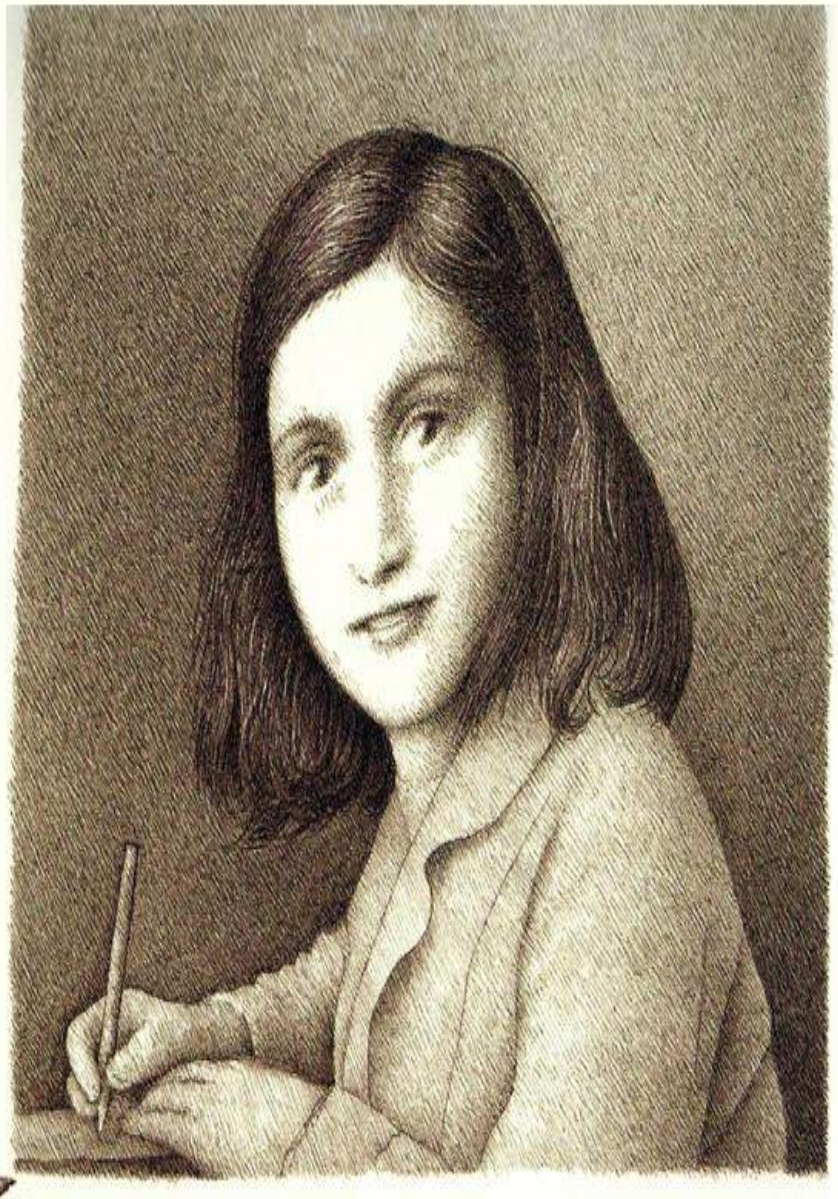

अंत के दो शब्द

उस लड़की का नाम था ऐन फ्रैंक. नेदरलैंड पर कब्ज़ा करने के बाद, नाजियों ने सभी यहूदियों को पकड़कर कंसंट्रेशन-कैम्प्स में भेजा. ऐन फ्रैंक और उसका परिवार एम्स्टर्डम में, पिता की फैक्ट्री के पास, एक गुप्त घर में छिपे रहे. पर अंत में नाजियों को उसका पता चला और 4 अगस्त 1944 को, उन्हें गिरफ्तार किया गया. छिपने के दौरान, फैक्ट्री के कई लोगों ने उनकी मदद की. उनमें से एक महिला थी - मीप गिएस. ऐन फ्रैंक और उसके परिवार की गिरफ़्तारी के बाद मीप गिएस ने, ऐन फ्रैंक की लिखित डायरी, और पन्नों को इकट्ठा किया.

मार्च 1945 में, टाइफाइड से ऐन फ्रैंक का बरजिन-बेलसन कैंप में देहांत हुआ. उसके तीन हफ़्तों के बाद उस कैंप के सभी कैदियों को मुक्त किया गया. ऐन फ्रैंक के परिवार में, सिर्फ उसके पिता ही जिंदा बचे. युद्ध के बाद मीप गिएस ने उन्हें ऐन फ्रैंक की लिखित डायरी सौंपी. पिता ने डच भाषा में उसका प्रकाशन करवाया. ऐन फ्रैंक की पहली डायरी जून 1947 में छपी. अमरीका में वो पहली बार 1952 में छपी. बाद में उस ऐतिहासिक डायरी का, 70 से भी अधिक भाषाओँ में अनुवाद हुआ और वो पुस्तक आज भी प्रिंट में है.

डायरी में ऐन फ्रैंक ने खिड़की के पर्दे सिलने (11 जुलाई 1942), हवाई हमले और आक्रमण (7 दिसम्बर 1943), सामूहिक हनुक्का त्यौहार (7 दिसम्बर 1942) का ज़िक्र किया. ऐन फ्रैंक की डायरी में बलूत के पेड़ का तीन बार ज़िक्र है.

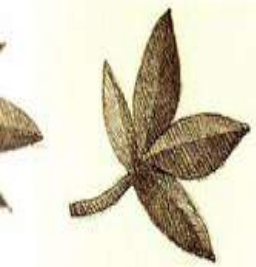

बलूत के पेड़ को बचाने के प्रयास 10 साल चले. पर 2010 में पेड़ गिर गया. उस पेड़ के पौधों को अन्य कई स्थानों पर लगाया गया – विशेषकर जहाँ पर मुक्ति और सहनशीलता की गहरी चाह थी.

नेशनल सितम्बर 11 मेमोरियल और म्यूजियम, न्यू-यॉर्क, न्यू-यॉर्क
सेंट्रल हाई स्कूल, लिटिल रॉक, अर्कांसस (1957 संघर्ष)
कैपिटल हिल, वाशिंगटन, डी. सी.
द चिल्ड्रेन्स म्यूजियम ऑफ़ इंडिआनापलिस, इंडिआना (एन फ्रैंक शांति पीस पार्क)
सोनोमा स्टेट यूनिवर्सिटी, रोहनेर्ट पार्क, कैलिफ़ोर्निया (होलोकॉस्ट एंड जेनोसाइड मेमोरियल ग्रोव)
साउथर्न कायुगा स्कूल डिस्ट्रिक्ट, औरोरा, न्यू-यॉर्क (हेरिएट टबमैन का घर, विमेंस राइट्स नेशनल हिस्टोरिकल पार्क)
होलोकॉस्ट सेण्टर फॉर ह्यूमैनिटी, सीएटल
बोस्टन कॉमन्स, बोस्टन, मेसाचुसेट्स
होलोकॉस्ट मेमोरियल सेण्टर, फर्मिन्ग्तों हिल्स, मिशिगन
आयडाहो एन फ्रैंक ह्यूमन राइट्स मेमोरियल, बोइसे
क्लिंटन प्रेसिदेन्तिअल् सेण्टर, लिटिल रॉक, अर्कांसस

ऐन फ्रैंक के बलूत के पेड़ से निकले अनेक पौधे, दुनिया भर में लगाए गए हैं.